छत्तीसगढ़ी भाषा

- प्राचीनकाल में छत्तीसगढ़ी भाषा को कोसली भाषा कहा जाता था,
- किन्तु जब दक्षिणकोसल छत्तीसगढ़ कहलाने लगा तो, यहां कि भाषा को कोसली से छत्तीसगढ़ी भाषा कहा जाने लगा।
- छत्तीसगढ़ी भाषा संस्कृत की अनुगाामिनी है,
- डॉ महेश चन्द्र बघेल ने छत्तीसगढ़ी भाषा को संस्कृत कि पठियारी बहन कहा है।
- छत्तीसगढ़ी भाषा, मागधी और शौरसेनी प्राकृत भाषा के मिश्रण से बना है, मागधी भाषा का अधिक प्रभाव है।
- मागधी को अर्धमागधी भी कहा जाता है।
- छत्तीसगढ़ी व्याकरण के प्रणेता हीरालाल काव्योपाध्याय को कहा जाता है, इन्होनें 1885 में छत्तीसगढ़ी व्याकरण तैयार किया था
- मास्टर हीरालाल काव्योपाध्याय को छत्तीसगढ़ का पाणिनी कहा जाता है, ये धमतरी के एंग्लो – वर्नाकूलर स्कूल के हेड मास्टर थे, इन्होनें सबसे पहले छत्तसगढ़ी व्याकरण लिखा था,
- लगभग 100 साल पहले जार्ज ग्रियर्सन द्वारा भारत का भाषा सर्वेक्षण जिस व्यापक स्तर पर कराया गया था, उसके आधार पर एकमात्र छत्तीसगढ़ी का व्यवस्थित व्याकारण प्राप्त हुआ था,
- इस व्याकरण से ग्रियर्सन इतने उत्साहित हुये थे कि उन्होने हीरालाल काव्योपाध्याय के ससम्माण नामोल्लेख सहित इसे सन् 1990 में एशियाटिक सोसायअी ऑफ बंगाल, शोध पत्रिका के खंड 49, भाग –1 में अनुदित और समपादित कर प्रकाशित करवाया था।
- हैहयवंशी के शासन काल में छत्तीसगढ़ में अर्धमागधी से विकसीत बोली का प्रचार –प्रसार हुआ, जिससे पुरानी बोलियॉ केवल पहाड़ी क्षेत्रो तक ही सीमित रह गई
- छत्तीसगढ़ी की कोई अलग लिपि नही है, देवनागरी ही इसकी लिपि है,

- छत्तीसगढ़ में लगभग 93 भाषा, बोली जाती है,
- राज्य में सबसे अधिक छत्तीसगढ़ी इसके बाद हल्बी भाषा बोली जाती है।

छत्तीसगढ की बोलियो को मुख्यतः तीन भाषा परिवारो में बांटा गया है।

- मुण्डा भाषा परिवार
- द्रविड़ भाषा परिवार
- आर्य भाषा परिवार

मुण्डा भाषा परिवार – इसे दो भागो में बांटा गया है

- प्राक् दक्षिणी मुण्डा
- प्राक् उत्तरी मुण्डा

प्राक् दक्षिणी मुण्डा को दो भागो में बांटा गया है।

1. प्राक् बस्तर मुण्डा – गदबा
2. प्राक मध्य मुण्डा – खड़िया

प्राक् उत्तरी मुण्डा – कोरकू, मवासी निहाली

प्राक खेरवारी – विदहो

कोरवा – नगेसिया, सौंता, माझी, मझवार, खैरवारी

द्रविड भाषा परिवार –

प्राक द्रविड – इसके अन्तर्गत दक्षिण केन्द्रीय द्रवीड़, केन्द्रीय द्रवीड़, उत्तरी द्रवीड़ आते है।

दक्षिण केन्द्रीय द्रवीड़ / गोड़ी द्रविड़ – इसके अन्तर्गत दोर्ली, दंडामी माड़िया, मुड़िया, अबुझमाड़िया आदि आते है।

कन्द्रीय द्रवीड़ – परजी या धुरवी

उत्तरी द्रविड़ – कुडुख, या उरांव

आर्य भाषा परिवार –

प्राक आर्य के अर्न्तगत – अर्द्धमागधी, मागधी, विजनीकृत आदि आते है।

अर्द्धमागधी – पूर्वी हिन्दी – छत्तीसगढ़ी

मागधी – उड़िया – भतरी

विजनीकृत – हल्बी, सदरी

भाषिक प्रमुख रूप से छत्तीसगढ़ी बोली को प्रमुख पांच भागो में बांटा गया है।

जिसमें से है, केन्द्रीय, पश्चिमी, उत्तरी, पूर्वी और दक्षिणी आदि

केन्दीय – दसके अन्तर्गत कवर्धाई, कांकेरी, खैरागएी, गोरो, गौरिया, केन्द्र क्षेत्रिय छत्तीसगढ़ी, डंगचगहा, देवार बोली, धमदी, नांदगाही, पारधी, बहेलिया, बिलासपुरी,

बैगानी, रतनपुरी, रायपुरी, शिकारी, सतनामी आदि 18 बोलियॉ केन्द्र क्षेत्रीय छत्तीसगढ़ी है,

अर्थात छत्तीसगढ़ के केन्द्र में प्रयोग किये जाने वाली भाषा को केन्द्र क्षेत्रीय कहा गया।

पश्चिमी छत्तीसगढ़ी – दसके अन्तर्गत बुंदेली और मराठी से संबंधित बोलिया आती है–

जैसे कमारी, खलटाही, पनकी, मरारी आदी 4 बोलिया है, जिनमें अगुआ – खलटाही है।

छत्तीसगढ़ के पश्चिम भाग में प्रयोग किये जाने वाली भाषा खलटाही कहा गया, पश्चिम में मैकल पर्वत और बालाघाट जिला है, जहां के लोग छत्तीसगढ़ को खलौटी या खुलौटी अर्थात निचला प्रदेश कहते है, और यहां कि भाषा को खलटाही कहते है, जिससे पश्चिम भाग कि भाषा खलटाही कहलाई ।

उत्तरी छत्तीसगढ़ी – इसके अन्तर्गत बघेली, भोजपुरी, और उरांव आदि से संबंधित बोलियां आती है –

जैसे – पंडो, सदरी, कोरबा, जषुपरी, सरगुजिया, नागवंशी, आदी 5 बोलिया है, जिसमें अगुआ सरगुजिया है,

छत्तीसगढ़ के उत्तर में प्रयोग किये जाने वाली भाषा सरगुंजिया के अन्तर्गत आती है।

पूर्वी छत्तीसगढ़ी – इसमें उड़िया से संबंधित भाषा सम्मिलित थी,

जैसे कलंगा, कलंजिया, बिंझवारी, भूलिया, लरिया, आदि 6 बोलियो को लरिया के अन्तर्गत रखा गया।

अर्थात पूर्व में बोली जाने वाली भाषा लरिया कहलाई, पूर्व में रहने वाले उड़िसा के लोग छत्तीसगढ़ को लरिया प्रदेश कहते थे, और इसकी भाषा को लरिया, जिससे कि छत्तीसगढ़ के पूर्व में रहने वालो कि भाषा लरिया कहलाई

दक्षिणी छत्तीसगढ़ी – इसके अन्तर्गत मिली जुली भाषा जैसे पश्चिम से मराठी, पूर्व सें उड़िया और दक्षिण से गोड़ी आदि की मिली – जुली भाषा को सम्मलित किया गया।

जैसे – अदकुरी, चंदारी, जोगी, धाकड़, नाहरी, बस्तरी, महारी, मिरगानी, हलबी, आदि 9 बोलियो को हल्बी के अर्न्तगत रखा गया,

अर्थात दक्षिण में प्रयोग कि जाने वाली भाषा हल्बी कहलाई ।

छत्तीसगढ़ी भाषा के अनेक तत्व मानक हिन्दी में प्रयोग किये जाते है, जिसे छत्तीसगढ़ी हिन्दी या छत्तीसगढ़ी प्रभावित हिन्दी कहा जाता है।

जैसे

उच्चारण संबधित कुछ अंतर	
छत्तीसगढ़ी प्रभावित हिन्दी	मानक हिन्दी
घांस, चांवल, हाथी, ढँकना तृप्ती, दीप्ती उपर, उनेउ	घास, चावल, हाथी, ढकना तृप्ति, दीप्ति ऊपर, उनेऊ
व्याकरण संबंधित कुछ अंतर	

छत्तीसगढ़ी प्रभावित हिन्दी	मानक हिन्दी
रामायण पढ़ा, टिकट माँगी प्रतिक्रिया पूछे जाने पर	रामायण पढ़ी, टिकट माँगी प्रतिक्रिया पूछी जाने पर

छत्तीसगढ़ कि कुछ बोलियाँ और उसका नामकरण

कलंगा – उड़िसा के निकट होने के कारण उड़िया भाषा से अधिक प्रभावित है, इस भाषा का प्रयोग रायपुर जिले के पूर्वी सीमांत पर, और रायगढ़ जिले के दक्षिणी छोर पर, तथा उड़िसा के पश्चिमी सीमा पर रहने वाले कुछ कबीले वासियो द्वारा प्रयोग किया जाता है।

कलंजिया – यह उड़िसा के संबलपुर जिले के दक्षिण – पश्चिम भाग में बोली जाती है, जिसका प्रभाव छत्तीसगढ़ के इस भाग पर रहने वाले लोगो पर पड़ता है, जिसे कंजा और कन्नौजिया ग्वाले कहा जाता है,

कवर्धाई – कवर्धा जिले के लोगो द्वारा बोली जाने वाली भाषा है

कांकेरी – कांकेर में रहने वाले लोगो के द्वारा बोली जाने वाली भाषा, जोकि इस जिले में रहने वाली आदिवासी हलबी और पूर्वी भाग में प्रचलित उड़िया – बोली भतरी से समपर्क के कारण बना है।

खैरागढ़ी – खैरागढ़ में बोली जाने वाली भाषा है

गोरो – इसका प्रयोग छत्तीसगढ़ के उन लोगो द्वारा किया जाता है, जो कि असम में रहने लगे है, जिनकी बोली पर असम की भाषा का थोड़ा बहोत प्रभाव दिखाई देता है,

कुछ छानबीन के आधार पर यह पाया गया कि ये लोग बैगा जनजाती के है, अतः इनकी मातृ भाषा बैगानी है।

गौरिया – इस भाषा का प्रयोग पश्चिम बंगाल में किया जाता है, रिपोर्ट के अनुसार कुछ गौरिया – भाषियो ने स्वयं को कोष्ठकों में छत्तीसगढ़ी भाषी लिखा था।

बहेलिया – राजनांदगांव, दुर्ग, बेमेतरा, धमतरी, रायपुर, गरियाबंद, महासमुंद,जांजगीर, कोरबा,बिलासपुर, मुंगेली, और कवर्धा आदि जिलो में इधर – उधर रहने वाली बहेलिया जातियो द्वारा बोली जाने वाली भाषा है।

मरारी – यह पश्चिम में बालाघाट कि ओर रहने वाली मरार जातियो द्वारा प्रयोग किया जाता है, इसे दक्षिणी बघेलखंडी भी कहा जाता है।

शिकारी – यह बहेलिया जाति का ही एक उपरूप है, जिनके कुछ लोग मैदानी भागो में रहते है।